आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015–2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : पंद्रहवां अंक : चौथा अगस्त – 2017

4	नाम साहेब दा चंबे दी बूटी
11	गुरुमत
25	सवाल–जवाब
32	अमृतवेला
34	धन्य अजायब

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स,नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अगस्त 2017 –185– मूल्य – पाँच रुपये

संगत के अनुरोध पर परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने कनाडा में दिनांक 25 जून 1977 को अपने मुखारविन्द से यह शब्द गाया:

नाम साहेब दा चंबे दी बूटी

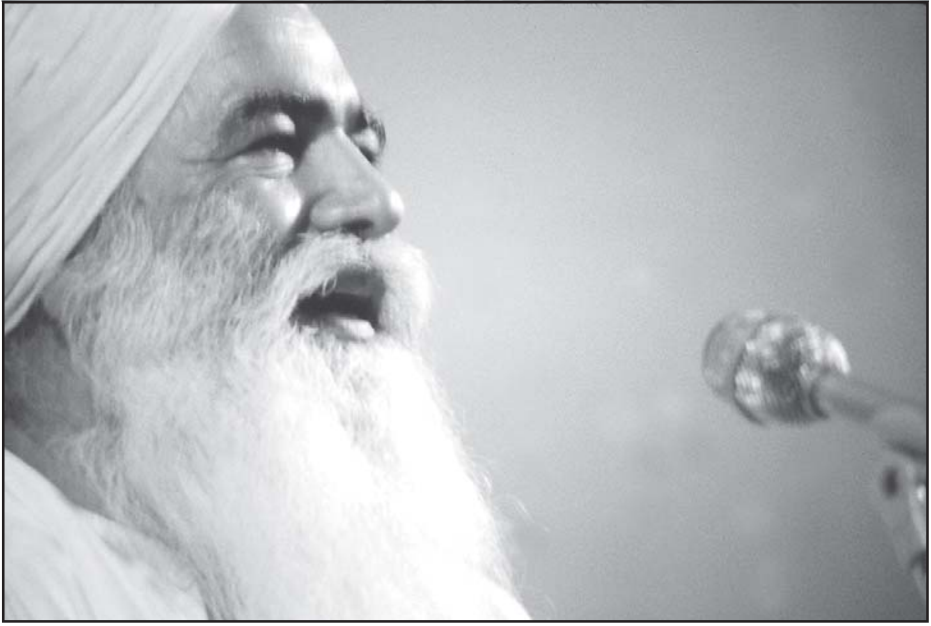

नाम साहेब दा चंबे दी बूटी (2)
सतगुरु मन मेरे विच लाई प्यारेयो (2)
सतसंग दा नित पानी दे के (2)
कर लई दूण सवाई प्यारेयो (2)
अंदर बूटी महक मचाया (2)
जां फुल्लण ते आई प्यारेयो (2)
जीवे कृपाल सोहणा सतगुरु (2)
जिन ऐह बूटी लाई प्यारेयो (2)
कृपाल सिंह नूं सिमर के पापी तरे अनेक (2)
कहे 'अजायब' ना छोड़िए, कृपाल सिंह दी टेक (2)

सुण फरियाद पीरां देया पीरा (2)
इक आख सुणावां तैनूं प्यारेया (2)
तेरे जेहा मैनूं इक्क वी नीं मिलणा (2)
मेरे जेहियां तैनूं लक्खीं प्यारेया (2)
फोल ना कागज बदियां वाले (2)
दर तो धक्कीं ना मैनूं प्यारेया (2)
जे मेरे विच ऐब गुनाह ना हुंदे (2)
तूं बक्शींदा कीहनूं प्यारेया (2)
तिल–तिल दा अपराधी तेरा (2)
रत्ती–रत्ती दा मैं चोर प्यारेया (2)
पल–पल दा मैं गुन्हीं भरया (2)
बक्शीं अवगुण मेरे प्यारेया (2)

किसे काम का थे नहीं कोई ना कौडी दे (2)
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह (2)
दूसर का बालक होता भक्ति बिना कंगाल (2)
कृपाल गुरु कृपा करी हर धन दे कियो निहाल (2)
गद–गद् बानी कंठ में आंसू टपके नैन (2)
वो तो बिरहन कृपाल की तड़पत है दिन–रैन (2)
हाय–हाय कृपाल कद मिले छाती फाटी जाऐ (2)
ऐसा दिन कद होवेगा दर्शन करुं अघाये (2)
बिन दर्शन कल ना पड़े मनुआ धरत ना धीर (2)
'अजायब' गुरु कृपाल बिना कौन बंधावे धीर (2)

तुध अग्गे अरदास हमारी (2)
जियों पिंड सब तेरा प्यारेया (2)

कहे नानक सब तेरी वडयाई (2)
कोई नाम न जाणे मेरा प्यारेया (2)
तेरा कीता मैं जातो नाहीं (2)
मैनूं जोग कीतोई प्यारेया (2)
मैं निर्गुणहारे कोई गुण नाहीं (2)
आपे तरस पेयोई प्यारेया (2)
तरस पया मैं रहमत होई (2)
सतगुरु साजन मिलया प्यारेया (2)
नानक नाम मिले तां जीवां (2)
तन मन थीवै हरेया प्यारेया (2)

उस परिपूर्ण परमात्मा का नाम चंबे की बूटी की तरह है। बाग के अंदर एक ऐसी बूटी होती है जिसे रात की रानी भी कहते हैं, वह बूटी रात के समय महकती है। इसी तरह जिसके अंदर परमात्मा का नाम प्रकट हो जाता है वह भी महकता है। जैसे बाग के अंदर माली चंबे की बूटी लगाता है उसी तरह सेवक के अंदर यह बूटी सन्त-सतगुरु लगाते हैं। चंबे की बूटी को पानी की जरूरत पड़ती है, माली बूटी को पानी देता है उसी तरह सन्त-सतगुरु इस बूटी को सतसंग का पानी देते हैं।

जब हर रोज इसे सतसंग का पानी मिलता है तो यह बूटी दिन-रात बढ़ती चली जाती है। चंबे की बूटी पर जब फूल लगते हैं तो यह बूटी महकती है। इसी तरह जिनके अंदर नाम की बूटी प्रकट होती है दुनिया में उनकी महक होती है लेकिन इस बूटी की महक विरले नाक वालो को ही आती है। जिनके नाक साफ होते हैं उन्हें ही इसकी महक चढ़ती है।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे एक बार की बात है कि अप्रैल का महीना था, मैं पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़ रहा था।

उस समय मैं इंजीनियर था। मुझे यकायक खुशी महसूस हुई। मैंने सोचा! सरकार की तरफ से कोई ओहदा बढ़ने वाला नहीं, किसी लड़के–लड़की की शादी की खुशी भी होने वाली नहीं फिर यह खुशी क्यों महसूस हो रही है? थोड़ी दूर पर एक मस्ताना फकीर बैठा हुआ था। वह मुझे देखकर दूर से ही कहने लगा, ''महक लेने वाला भी कोई–कोई ही नाक होता है।'' फिर मुझे समझ आया कि यह महक उस फकीर में से ही आ रही थी।

जिस तरह नौंवे गुरु को हुक्म था कि तू अंदर बैठकर भजन–अभ्यास कर। उन्हें बाहर कोई नहीं जानता था, उन्होंने अपनी जिंदगी भजन–अभ्यास में ही लगाई थी। जब हुजूर कृपाल ने मुझे अपने चरणों में लगाया तो मुझे यही हुक्म दिया कि खूब अभ्यास करना है। अपना एक सैकिंड भी बेकार नहीं करना, अपनी जिंदगी भजन–अभ्यास में लगानी है। मैं तकरीबन सात साल जमीन के अंदर गुफा बनाकर अभ्यास करता रहा। उस समय मेरे पास एक सेवादार था। मेरा बिल्कुल विचार नहीं था कि मैं बाहर दुनिया में जाऊँगा।

मैं पश्चिम के लोगों को बिल्कुल नहीं जानता था। यह बूटी की महक ही थी जिसने आप लोगों को यहाँ खींच लिया। मैंने आश्रम में पक्का प्रोग्राम बना लिया था कि मैं साल भर किसी से नहीं मिलूंगा। मैंने प्रेमियों की काफी मिन्नत–खुशामद के बाद आठ बजे से नौं बजे तक एक घंटे का समय मंजूर किया। मालिक की मौज मैं जितना अंदर रहा उतना ही पश्चिम से प्रेमी आने लगे।

मैंने अपने आश्रम से पचास मील तक हर आदमी से कह रखा था कि पश्चिम से और इस मुल्क से भी कोई आदमी मेरे पास न आए। आपके पास रसल प्रकिन्स और कुलवन्त दोनों बैठे हैं आप इनसे पूछ लें कि इन्हें मेरे पास पहुँचने के लिए कितनी

मुश्किलों का सामना करना पड़ा था? इन्हें मेरे संदेश मिलते थे कि मेरे पास कोई न आए। कृपाल ने जो बूटी लगाई थी इन्हें वही महक खींचकर लाई।

मैं उस सर्वशक्तिमान कृपाल का शुक्रगुजार हूँ जिसने यह बूटी लगाई। मुझे कृपाल का बिछोड़ा था। ऐरन मेरी ऐसी हालत देखकर गया था कि किस तरह मेरी आँखों से पानी बहता था। मैं जब बोलता था तो गला रूक जाता था। कृपाल की विरह के कारण मेरी यह हालत थी, मेरे दिल में यही आता था कि मुझे किसी तरह भी कृपाल मिले। एडम स्टीफन ने मुझसे कहा, ''कृपाल मेरा भी गुरु है तू इतना क्यों रोता है? तेरी आँखें खराब हो जाएंगी।'' मैंने उससे कहा, ''यह मेरे बस की बात नहीं, अपनी–अपनी पीड़ा है। वाक्य ही तीन महीने बाद मेरी आँखें खराब हो गई, मुझे आँख का ऑपरेशन करवाना पड़ा।''

कृपाल गुरु के बिना किसी ने भी मेरे अंदर के जन्म–मरण के दर्द को नहीं मिटाया। दिन–रात यही पुकार थी कि किस तरह कृपाल मिले! मुझे बचपन से ही तड़प लगी हुई थी। मैं जब छह साल का था तब मैंने अपने माता–पिता को जवाब दे दिया था कि मैं दुनिया में आप लोगों के लिए नहीं आया। मैं बचपन से अपनी जिंदगी में चार घंटे से ज्यादा कभी नहीं सोया।

मैं जिस दिन से कनाडा आया हूँ उस दिन से अभी तक एक मिनट भी नहीं सोया। आप हैरान होंगे कि न सोने से क्या हालत हो सकती है? लेकिन मेरी आँख या शरीर भारी नहीं, मेरे ऊपर नींद का कोई असर नहीं। जब वह सर्वशक्तिमान परमात्मा मेरे आश्रम में आए तब मैंने उनके आगे फरियाद की, ''तू पीरों का पीर है मुझे इस दुनिया में तेरे जैसा कोई नहीं मिलेगा तुझे मेरे जैसी लाखों ही मिल सकती हैं।'' मैंने रोकर विनती की, ''हे

सर्वशक्तिमान कृपाल! अगर तूने मेरा गुनाहों वाला कागज खोला तो मैं तेरे दर पर खड़े होने के भी काबिल नहीं।'' मैंने रोते–रोते और हँसकर यह भी कहा , ''अगर मुझमें गुनाह न होते तो तुझे बख्शनहार कौन कहता? मैं तेरा तिल–तिल का अपराधी हूँ, रत्ती–रत्ती का चोर हूँ; पल–पल गुनाहों से भरा हुआ हूँ तू मेरे अवगुण बख्श दे।''

हुजूर के आगे विनती भी की मैं किसी काम का नहीं था तेरे बिना मेरी कोई कोड़ी कीमत भी नहीं देता था। जब कृपाल इस शरीर में प्रकट हुआ तो यह देह अमोलक हो गई। मैं गुरु धारण करने के लिए दुनिया में घूमा, कई मठों और कई गुरुद्वारों में गया। मैंने कहा, ''हे सच्चे पातशाह! अगर मैं किसी और का शिष्य होता तो मैं भक्ति के धन के बगैर कंगाल ही रह जाता।''

मैंने हुजूर कृपाल से दुनिया का धन–दौलत, पुत्र कुछ नहीं माँगा। बचपन से ही मेरा दिल–दिमाग खाली था। लोग जिन जायदादों के पीछे लड़ते हैं उतनी जायदाद मेरे पिता के घर में थी। दुनिया जायदादों के पीछे लड़ती है मुझे बाहर की जायदाद की कोई जरूरत नहीं थी। मेरे सतगुरु सर्वशक्तिमान कृपाल ने मुझे भक्ति का धन देकर निहाल कर दिया।

जब हुजूर कृपाल ने मुझे अंदर बिठाया लोग ताने–मेहणे देते थे कि यह पागल हो गया है। अमृतसर में पागलों का ईलाज करते हैं। कई लोगों ने यह सलाह दी कि इसे अमृतसर के पागलखाने में ले जाकर बिजली लगवा लाएं। कई लोग कहते कि दिल्ली वाले कृपाल ने इसके सिर में कोई जादू डाल दिया है लेकिन मैं उन्हें प्यार से कहता:

कृपाल सिंह नू सिमर के पापी तरे अनेक।
कहे अजायब न छोड़िए कृपाल सिंह की टेक।।

कृपाल सिंह को याद करके अनेकों पापी तर गए। अजायब आपको प्यार से कहता है कि आप भी कृपाल का आसरा रखें, कृपाल से नाम लें। वे लोग खामोश हो जाते कि इसे तो कृपाल ही कृपाल अच्छा लगता है।

मेरी उस घट–घट वासी सचखंड के मालिक कृपाल के आगे अरदास है कि मेरा जी, पिंड, शरीर सब कुछ कृपाल का है। मुझे यहाँ कौन जानता था? यह सब कृपाल की बड़ाई है। आपको भी चाहिए कि आप उस सर्वशक्तिमान कृपाल का नाम जपें और अपनी जिंदगी का बेड़ा पार करें।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरुमत

गुरु रामदास जी महाराज की बानी DVD-502 अमेरिका

यह बानी श्री गुरु रामदास जी महाराज की है। आपने इस बानी में यह बताने की कोशिश की है कि किस तरह महान आत्माएं जीवों को निकालने के लिए इस संसार में आती हैं लेकिन यहाँ उन महान आत्माओं की विरोधता की जाती है, उन्हें किस तरह तंग किया जाता है? लोग महात्माओं को सूली पर चढ़ा देते हैं फिर अपनी सच्चाई का होका देते हैं। इस बानी में उन लोगों की हालत बयान की गई है जो प्रेमी आत्माएं नाम के साथ जुड़ती हैं, भजन–सिमरन करती हैं उन्हें क्या मिलता है?

आप यहाँ सन्तबानी आश्रम में बारह–तेरह दिन इस तरह का प्रसंग सुनेंगे। इस प्रसंग पर एक किताब छपकर तैयार होगी और उसकी टेपें भी आपको मिलेगी। आपको पता लगेगा कि **गुरुमत** क्या चीज है और गुरुमत में कौन लोग आते हैं? गुरुमत में आए लोगों के साथ भी काल किस तरह ठग्गी मारता है और वे लोग मन के कहे चलते हैं। जो लोग नाम लेकर गुरुमत को छोड़ जाते हैं उनकी क्या हालत होती है? आप यह सब कुछ इस बानी के अंदर सुनेंगे।

जो लोग यह कहते हैं कि हम सन्तमत में आ गए है, हमने नामदान प्राप्त कर लिया है अब हम जो कुछ भी करें हमें दण्ड नहीं मिलेगा। वे लोग इस बानी को ध्यान से सुनें! कुदरत का कानून है कि जो बुराई करेगा उसे बुराई का फल अवश्य

भुगतना पड़ेगा। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''काल बिल्कुल रियायत नहीं करता। चाहे लेखा गुरु दे चाहे शिष्य दे, लेखा जरूर देना पड़ता है।''

आपको इन पंद्रह दिनों में इस बानी में यह सुनने को मिलेगा कि कोई रातों-रात महात्मा नहीं बनता, महात्मा कमाई करके बनता है। ऐसा नहीं कि जिसने सारी जिदंगी शब्द-नाम की कमाई की काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के साथ लड़ा, वह कामयाब हो गया। अगर दस आदमी यह कह दें कि यह सन्त नहीं तो कोई उसका रास्ता बंद नहीं कर सकता। जिस आदमी ने सारी जिंदगी कमाई नहीं की लेकिन पार्टी वाले दस आदमी यह कहने लग जाएं कि यह महात्मा है तो किसी के कहने से कोई महात्मा नहीं बनता। ऐसी महान आत्माएं सचखंड से आती हैं, अपनी जिंदगी में दुनिया को डेमोस्ट्रेशन देने के लिए तन तोड़कर मेहनत करती हैं, खूब भजन-सिमरन करती हैं।

महात्मा न तो सतसंग में किसी की निंदा करते हैं न जातिय तौर पर किसी की निंदा करते हैं और न ही वे अपने सेवकों से कहते हैं कि आप किसी की निंदा करें। निंदा करके हम अपने जीवन को गंदा करते हैं दूसरों के पाप अपने सिर पर लेते हैं।

गुरु अमरदेव जी महाराज ने बुढ़ापे में गुरु अंगददेव जी महाराज की बहुत सेवा की। आपके दिल में बहुत विरह और तड़प थी। जब गुरु अंगददेव जी चोला छोड़ गए तो उनके लड़के दादू और दासु ने अमरदेव जी की बहुत विरोधता की। एक बार अमरदेव जी सतसंग कर रहे थे तो दादू और दासु ने आपको

लात मारी कि आप हमारे घर के नौकर होकर किस तरह गद्दी के वारिस बन सकते हैं? गुरु अमरदेव जी में बहुत नम्रता थी, आप स्टेज से नीचे उतरकर उनके पैर दबाने लगे कि मेरा बूढ़ा शरीर है आपके पैर में दर्द हुआ होगा, आओ! मैं आपके पैर दबा दूं, आप गद्दी संभालें।

गुरु अमरदेव जी गद्दी छोड़कर चल पड़े। आप घोड़ी पर दरियां लादकर चलने लगे तो रास्ते में चोर मिले, चोरों ने आपसे दरियां छीन ली। जब आप गोइंदवाल आए तो वहाँ के चौधरी गोंदे मरवाह ने आपकी बहुत मुखालिफत की।

जब गुरु अमरदेव जी ने गोइंदवाल में अपना सतसंग शुरू किया उस समय वहाँ पर एक तपा योगी था। तपा योगी को आपसे बहुत ईर्ष्या हुई क्योंकि जो एक बार गुरु अमरदेव जी का सतसंग सुन लेता था वह उन्हीं का हो जाता था। तपा योगी को कमी महसूस हुई कि लोगों ने उसे मानना छोड़ दिया है। मालिक की मौज उस गांव में बारिश नहीं होती थी। उस साल बहुत कहर पड़ा हुआ था। योगी ने गोंदे मरवाह को सिखाया अगर इन्हें गांव से निकाल दें तो बारिश हो सकती है क्योंकि यह देवी–देवताओं को नहीं मानता तो बारिश क्यों हो!

सन्त तो मालिक के भाणें में रहकर खुश होते हैं। वहाँ के लोगों ने अमरदेव जी से विनती की कि महाराज जी! बारिश नहीं हो रही। तपा योगी ने इस बात से फायदा उठाते हुए कहा अगर आप लोग अमरदेव को गांव से बाहर निकाल दें तो बारिश हो सकती है। आप जट्टों को जानते ही हैं। जट्ट गुरु अमरदेव जी के

पास जाकर अपने मतलब की बात करने लगे अगर आप इस गांव से चले जाएं तो बारिश हो सकती है।

गुरु अमरदेव जी महाराज मालिक के भाणें में खुश थे। आपने कहा अगर मेरे जाने से आपका फायदा है तो मैं यहाँ से चला जाता हूँ। कमाई वाले को वहाँ से अपना बिस्तर उठाना पड़ा। गुरु अमरदेव जी वहाँ से चले गए। बाद में वहाँ भाई जेठा आया और उसने पूछा कि गुरु साहब कहाँ हैं? वहाँ के किसी आदमी ने भाई जेठा को बताया कि योगी ने कहा है कि बारिश तब होगी अगर गुरु अमरदेव जी को इस गांव से निकाल दिया जाए इसलिए गुरु साहब यहाँ से चले गए हैं।

भाई जेठा बहुत कमाई वाला था। भाई जेठा ने कहा कि बारिश तो फिर भी नहीं हुई। उसने कहा कि जिस खेत में योगी के माँस का एक तिनका भी चला जाएगा वहाँ बारिश हो जाएगी। जट्टों को अपना मतलब था। किसी ने योगी से कहा कि पहले तू मेरे खेत में चल, किसी ने कहा तू मेरे खेत में पहले चल। किसी ने आव देखा न ताव देखा, किसी ने उस योगी की बाँह खींची किसी ने उसकी लात खींची। योगी बेचारा खत्म हो गया, वह जिस खेत में भी जाए वहाँ बारिश हो जाए।

उसके बाद गुरु अमरदेव जी महाराज ने कुछ मील दूर जाकर एक मकान का दरवाजा बंद करवा लिया और उस दरवाजे पर लिख दिया कि कोई दरवाजा न खोले, मुझे किसी से नहीं मिलना। अगर कमाई वाले महात्मा से दुनिया फायदा नहीं उठाती तो महात्मा खामोश भी हो जाते हैं। भाई गुरदास, बाबा

बुड्ढा और कुछ लोगों ने पीछे से दीवार तोड़कर दरवाजा खोला। अमरदेव जी ने भाई जेठा को दर्शन नहीं दिए उसकी तरफ पीठ करके बैठ गए। जब भाई जेठा ने दर्शन देने के लिए कहा तो अमरदेव जी ने कहा, ''मैंने तुम्हें रिद्धियां–सिद्धियां दिखाने के लिए नहीं कहा, मैं मालिक के भाणें में खुश हूँ।'' उसने माफी मांगी तो गुरु अमरदेव जी ने उस तरफ बाँह की। अब वहाँ धर्मस्थान है जिसे सन्न साहब कहते हैं।

उसके बाद गुरु अमरदेव जी महाराज ने लोगों को नामदान दिया, सीधे रास्ते का अभ्यास बताया। गुरु अमरदेव जी के बाद गुरु रामदास जी उनकी गद्दी पर बैठे। गुरु रामदास जी ने इस बानी में उस सबका जिक्र किया है जो गुरु अमरदेव जी के साथ उस गाँव में हुआ था।

काल ने कई वर लिए हुए हैं। उनमें से एक वर यह भी है कि सन्त जब भी संसार में आएं कोई करामात न दिखाएं। अगर सन्त करामात दिखाएं तो संसार में एक महात्मा आया ही काफी था। महात्मा के लिए किसी अंधे को आँख दे देनी, लूले को टांग दे देनी मामूली बात है लेकिन महात्मा ऐसा नहीं करते।

काल ने यह भी वर लिया हुआ है कि मैं जिसे जहाँ जन्म दूं वह वहाँ खुश रहे। सुअर की योनि सबसे मुश्किल है फिर भी वह इस संसार को छोड़ना नहीं चाहता। काल ने यह भी वर लिया हुआ है कि किसी को भी अपने पिछले जन्म का ज्ञान न हो कि मैं सुख पा रहा हूँ तो किस कर्म का फल पा रहा हूँ अगर दुख पा रहा हूँ तो मैंने कौन सा पाप किया था?

सन्त–महात्मा संसार में आकर किसी को बद्दुआ या वर नहीं देते। कभी इत्तर वाले की शीशी खुली भी रह जाती है जिनकी ग्रहणशक्ति होती है उन्हें महक आ जाती है वे उनसे फायदा उठा लेते हैं। जाहरी तौर पर महात्मा कोई करामात नहीं दिखाते।

सतिगुरु पुरखु दइआलु है जिस नो समतु सभु कोइ।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, ''जब परमात्मा जीवों को तारना चाहता है अपनी शक्ति और अपनी कला किसी इंसान के अंदर रख देता है। गुरु एक तरफ परमात्मा के साथ जुड़ा होता है और दूसरी तरफ दुनिया के साथ जुड़ा होता है। गुरु हमें परमात्मा का संदेश देता है। गुरु जिस तरह अपनी औलाद को देखता है उसी तरह संगत को देखता है।''

गुरु की नजर में दोस्त और दुश्मन एक जैसे होते हैं। गुरु कमाई करके इस नतीजे पर पहुँचा होता है कि उसे पत्ते–पत्ते के अंदर, सब जीवों में परमात्मा ही दिखाई देता है। गुरु सबको परमात्मा समझकर ही सबसे प्यार करता है। उसे पूरा ज्ञान होता है कि किस तरह परमात्मा दुनिया में समाया हुआ है और दुनिया को किस नजरिए से देखना है?

जब हमारी आत्मा मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर चली जाती है परमात्मा के साथ मिल जाती है तब हम ऊपर जाकर नीचे की तरफ दुनिया को देखें तो पता लगता है कि सब जगह परमात्मा की ताकत काम कर रही है। पशु–पक्षी के अंदर भी परमात्मा है, हर जगह ही परमात्मा है। जब हम मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर की तरफ देखते हैं तो हमें अलग–अलग शक्लों के आदमी नजर

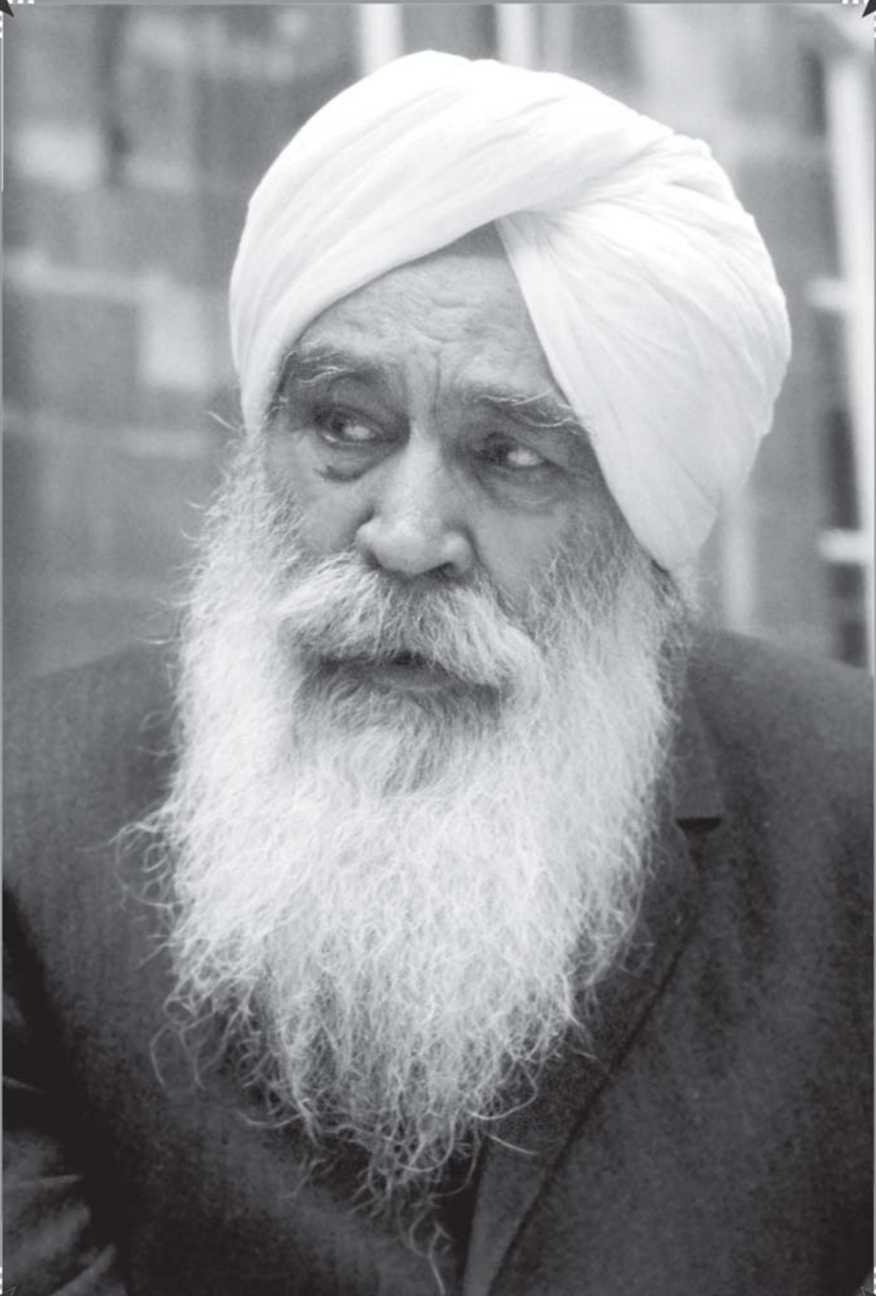

आते हैं। अलग–अलग मजहब हैं फिर हमें पता लगता है किस तरह हम एक–दूसरे के साथ घृणा कर रहे हैं, एक–दूसरे के ऊपर दोषारोपण कर रहे हैं। गुरु साहब कहते हैं:

बुरा भला तिच्चर आखदा जिच्चर है दो माहें।
गुरुमुख ईक पछांणेया इक्को माहें समाहे।।

एक द्रिसटि करि देखदा मन भावनी ते सिधि होइ।

आप कहते हैं, ''गुरु सबको एक ही दृष्टि और एक ही भावना से देखता है लेकिन हम गुरु से अपनी ग्रहणशक्ति के अनुरूप ही फायदा उठा सकते हैं। एक बाप के दो बेटे हैं। एक बेटा पिता का कहना मानकर स्कूल जाता है वहाँ टीचर का कहना मानता है तो उसकी सोई हुई विद्या जाग जाती है। दूसरा बेटा न पिता का कहना मानता है न स्कूल में टीचर का कहना मानता है तो वह अनपढ़ ही रह जाता है। एक बेटा पढ़–लिखकर स्याना बन जाता है अच्छी जिंदगी व्यतीत करता है लेकिन अनपढ़ जैसा होता है वैसा ही रह जाता है। एक पास हो जाता है, दूसरा फेल हो जाता है; वे दोनों होते तो एक ही बाप के बेटे हैं।''

मनमुख और गुरमुख दा हो नहीं सकदा मेल।
वक्खो वक्ख दोहां दा रस्ता ज्यों पानी ते तेल।
ईक डोबे दूजा तारे ऐह है अजब प्रभु दा खेल।
ईक बाप दे दो पुत्र ईक पास ते दूजा फेल।।

सतिगुर विचि अंम्रितु है हरि उतमु हरि पदु सोइ।

सन्त–सतगुरु ने बहुत मेहनत करके अपने अंदर नाम प्रकट किया होता है। सतगुरु ने अपनी जिंदगी का बहुत सा हिस्सा इस तरफ लगाया होता है। जो भक्ति नाम उसके अंदर प्रकट होता

है वह अमृत है, वही अमृत हमारे लेने के काबिल है। उसके अंदर जो भक्ति नाम है उसका कभी नाश नहीं होता। वही नाम हमारे साथ जाएगा, वही हमारा संगी–साथी है।

सन्त जितनी देर इस शरीर में बैठे हैं वे यह नहीं कहते कि हम आपके गुरु पीर हैं। वे कहते हैं कि आपका गुरु पीर शब्द–नाम है। वे कभी भी सेवक को अपनी देह के साथ नहीं बाँधते, शब्द–नाम के साथ ही जोड़ते हैं। इस संसार में न गुरु की देह रहनी है न सेवक की देह रहनी है। गुरु का स्वरूप शब्द है और सेवक का स्वरूप सुरत है।

बेशक गुरु नाम देकर उसी समय चोला छोड़ जाए लेकिन वह सेवक के लिए सदा जीवित रहता है। सेवक को कोई और गुरु धारण करने की जरूरत नहीं फर्क इतना ही होता है कि सेवकों को गुरु के स्थूल दर्शनों का जो फायदा होता है वे उस फायदे से वंचित रह जाते हैं। गुरु की जगह जो उत्तराधिकारी है उसका सतसंग करें। अगर कोई सवाल है या अंदर कोई रूकावट है तो उत्तराधिकारी से पूछ सकते हैं। जो सतगुरु चोला छोड़ गया है वह नए शिष्य नहीं बना सकता, नए शिष्य जीवित महापुरुष ही बना सकता है।

नानक किरपा ते हरि धिआईऐ गुरमुखि पावै कोइ।

गुरु साहब कहते हैं, ''जब परमात्मा हमारे ऊपर दया–मेहर करता है तभी हम महात्मा की संगत में जाते हैं। जब महात्मा हमारे ऊपर दया–मेहर करते हैं तभी हम 'शब्द–नाम' के साथ जुड़ते हैं।''

हउमै माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि।
लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''हौं–में हमारे और परमात्मा के बीच बहुत बड़ी रूकावट है। हम दिन–रात माया इकट्ठी करने में लगे हुए हैं। इससे आज तक न कोई तृप्त हुआ है और न हो ही सकता है। माया वृक्ष की छाया की तरह है, यह आज इस जगह है तो कल किसी और जगह होगी। सारी जिदंगी माया की कमी ही महसूस करते हैं। चाहे परमात्मा हमें सारी दुनिया का धन दे दे हम फिर भी भूखे ही रहते हैं।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

भुखया भुख न उतरी बन्ना पुरियां भार।

महात्मा नाम का लाहा कमाकर जाते हैं और अपने सेवकों को भी शब्द–नाम की कमाई करने का उपदेश करते हैं।

हउमै मैलु बिखु उतरै हरि अंम्रितु हरि उर धारि।

हमने शब्द–नाम की कमाई क्यों करनी है? हमारे और परमात्मा के बीच हौं–में की रूकावट है, इसे हम शब्द–नाम की कमाई करके ही हटा सकते हैं।

सभि कारज तिन के सिधि हहि जिन गुरमुखि किरपा धारि।

आप कहते हैं, ''शब्द–नाम की कमाई करने से न हमारी देह में कोई नुख्स पड़ता है न ही हमारे किसी कारोबार में घाटा पड़ता है। अगर हम शब्द–नाम की कमाई करते हैं तो कारोबार भी बहुत ढ़ग से चलते रहते हैं। हम जो भी कार्य आरंभ करते हैं वह सिद्ध होता है।''

नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि मेले सिरजणहारि।

आप कहते हैं, ''जो परमात्मा के चुनाव में आ गए हैं वे शब्द–नाम का दान प्राप्त करते हैं। वे हमेशा ही जुड़े रहते हैं और शब्द–नाम की कमाई करते हैं।''

तू सचा सहिबु सचु है सचु सचा गोसाई।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''हे परमात्मा! तू सच्चा है। सच से मतलब जिसका कभी नाश नहीं होता। तू आदि–जुगादि से चला आ रहा है, तू सबका दाता है सबका स्वामी है।''

तुधु नो सभ धिआइदी सभ लगै तेरी पाई।

अब आप कहते हैं, ''सब तेरी भक्ति करते हैं तेरी बड़ाई करते हैं। जो तेरी बड़ाई करते हैं वही अच्छे हैं, वे अपने घर पहुँच जाते हैं। पशु–पक्षी भी अपनी जुबान से उस परमात्मा का शुक्रिया करते हैं।'' फरीद साहब कहते हैं:

हौं बलिहारी तिन पंछियां जंगल जिन्हां वास।
कंकर चुगन थल वसन रब न छड्डन पास।।

हम रोज ही देखते हैं कि पक्षी हमारे उठने से पहले अपनी–अपनी बोली में परमात्मा का शुक्र करते हैं। इंसान अच्छे–अच्छे खाने खाता है वह परमात्मा का शुक्रगुजार नहीं होता अगर उठता भी है तो कितने ही अहसान करता है। कभी कहता है घुटने दुखते हैं गिट्टे दुखते है कभी कुछ तो कभी कुछ कहता है। फरीद साहब कहते हैं कि पक्षियों को अच्छा खाना नहीं मिलता फिर भी वे परमात्मा की याद में सुबह सबसे पहले उठते हैं।

तेरी सिफति सुआलिउ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई।

अब आप कहते हैं, ''हे परमात्मा! तेरी सिफत बहुत सुंदर है। जो तेरी सिफत करते हैं वे दुनिया में नहीं फँसते पार चले जाते हैं। महात्मा हमें समझाते हैं कि हम सतगुरु की सिफत तभी कर सकते हैं अगर गुरु के साथ हमारा प्यार–मौहब्बत है, नहीं तो हम दुनिया की सिफत में लगे हुए हैं क्योंकि हमारा प्यार दुनिया के साथ है लेकिन दुनिया ने साथ नहीं जाना।''

गुरमुखा नो फलु पाइदा सचि नामि समाई।

गुरुमुख उठते–बैठते, सोते–जागते परमात्मा की सिफत करते हैं। परमात्मा उन्हें सिफत का यह ईनाम देता है कि उन्हें अपने घर में निवास देता है, उन्हें शाबाश देता है गले से लगाता है और उनसे प्यार करता है।

वडे मेरे साहिबा वडी तेरी वडिआई।

अब आप कहते हैं, ''तू सबसे बड़ा है, सबका दाता है। तेरी बड़ाई भी बड़ी है जो तेरी बड़ाई करते हैं वे भी बड़े हो जाते हैं।''

विणु नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''नाम के बिना शब्द के बिना गुरु की बड़ाई के बिना हम जो दुनिया की तारीफ कर रहे हैं या बातें कर रहे हैं उससे हमारा मुँह फीका है, उससे आने वाला स्वाद भी फीका है और कान भी फीके हैं।''

मनमुख अहंकारु सलाहदे हउमै ममता वादु।

आप कहते हैं, ''अगर मनमुख लोग भक्ति की तरफ चलते भी हैं तो उनमें बहुत अहंकार होता है। वे अहंकार में फँस जाते हैं। वे जो कुछ भी करते हैं अहंकार के कारण ही करते हैं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे:

किया कराया सब गया जब आया अहंकार।

यह इस तरह है जैसे हम अच्छा पुलाव बनाकर उसके ऊपर राख का धूड़ा डाल लें।

जिन सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु।

मनमुख दुनिया की बड़ाई करने में लगा हुआ है कि मैंने इतनी तरक्की की है। मेरा रिश्तेदार इतना बड़ा है। आखिर हमने उनको छोड़ जाना है या उन्होंने हमें छोड़ जाना है।

जन नानक गुरमुखि उबरे जपि हरि हरि परमानादु।

अब आप कहते हैं, ''गुरुमुख लोग परमात्मा की भक्ति करते हैं परमात्मा की बड़ाई करते हैं। शब्द–नाम की महिमा करते हैं इसलिए वे इस संसार समुंद्र से पार हो जाते हैं।''

सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मनि हरी।

सतगुरु खुद इस संसार मंडल में आकर हमें बताता है कि नाम की कमाई करें। आपकी आत्मा जन्म–जन्म से भूखी–प्यासी है इसे तृप्ति मिलेगी।

नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली सभि दुख परहरी।

वह आकर हमें बताता है, ''नाम पवित्र है जिसके अंदर नाम टिक जाता है वह भी पवित्र हो जाता है। जो नाम की कमाई

करते हैं वे भी पवित्र हो जाते हैं। नाम लफ्ज नहीं नाम तवज्जो है नाम शक्ति है।'' कबीर साहब कहते हैं:

नाम जपत कोड़ी भला चौं चौं पए जिस चाम।
कंचन देह किस काम की जे मुख नाहीं नाम।।

तू आपे आपि निरंकारु है निरंजन हरि राइआ।
जिनि तू इक मनि सचु धिआइआ तिन का सभु दुखु गवाइआ।

अब गुरु रामदास जी महाराज परमात्मा की महिमा गाते हैं, ''तू माया से रहित है, तू कुलमालिक है। जो तेरी भक्ति करते हैं वे जन्म–मरण से ऊपर उठ जाते हैं।''

तेरा सरीकु को नाही जिस नो लवै लाइ सुणइआ।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''हे परमात्मा! तेरा कोई शरीक नहीं जिसे जाकर हम बता सकें। हम तेरे आगे झुककर ही फायदा उठा सकते हैं।''

तुधु जेवडु दाता तू है निरंजना तू है सचु मेरै मनि भाइआ।
सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ।।

अब आप कहते हैं, ''हे परमात्मा! तू दाता है बड़ी दया करता है। जीवों के अंदर आप ही रूचि पैदा करता है अंदर ही चाबी मरोड़ता है। महात्मा के पास भेजता है, दूर नजदीक का कोई सवाल नहीं। तू जिनकी अंदर से चाबी मरोड़ता है वे हजारों मील से आकर नाम प्राप्त कर लेते हैं। तू जिनकी चाबी नहीं मरोड़ता वे नजदीक बैठे रह जाते हैं। तू जिनको दात देता है उन्हें दात देकर पछताता नहीं बल्कि खुश होता है।''

***

4 जुलाई 1980

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

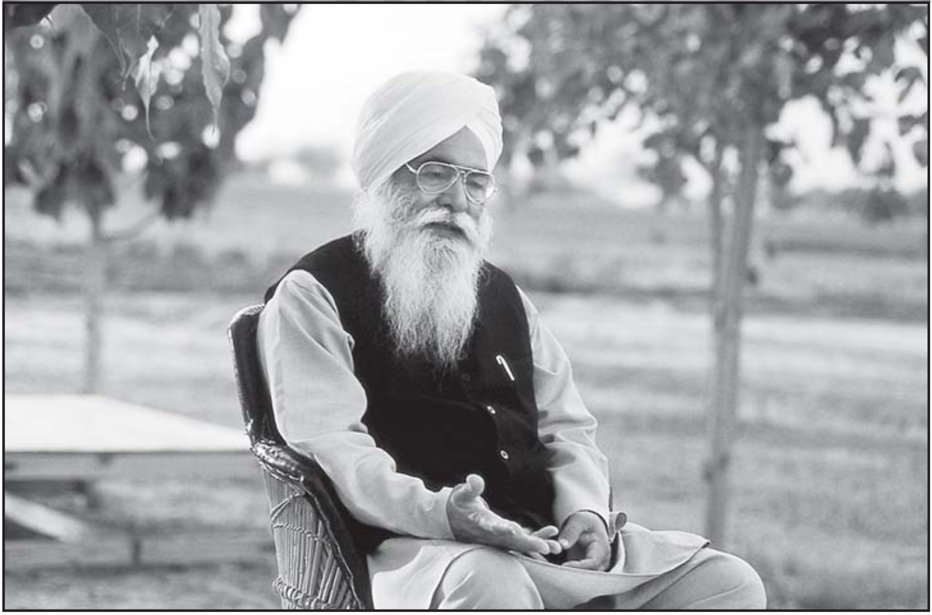

एक प्रेमी :– *महाराज जी! कल आपने बताया था कि सन् 1947 में हिन्दु मुस्लमानों के झगड़े में बाबा सावन सिंह जी ने अपनी कुर्बानी दी, खून दिया। सन् 1971 में भारत और पाकिस्तान के युद्ध में महाराज कृपाल ने अपनी कुर्बानी दी। पन्द्रह दिन पहले इन्द्रा गांधी के मरने के बाद आपके ऊपर भी असर पड़ा और आपने भी खून दिया। हम जानना चाहते हैं कि इस तरह की घटना का आपकी जिंदगी के ऊपर क्या असर पड़ेगा? हमें इस बात की चिन्ता है।*

बाबा जी :– आपको पता है कि सन्तमत में हमें चिन्ता फिक्र से ऊपर उठने के लिए बताया जाता है। कल सतसंग की लय कुछ ऐसी ही थी। आपके आने से पहले मेरी सेहत बहुत ही नाजुक मोड़ पर आ

चुकी थी, मैं बहुत कमजोर हो चुका था। आश्रम के सभी प्रेमी सोच रहे थे कि ग्रुप आ रहा है क्या होगा? मैंने प्रेमियों से कहा कि परमपिता कृपाल जानते हैं कि इस शरीर से कैसे काम लेना है? यह एक चमत्कार था कि जब मैं सीढ़ियों से नीचे उतरा तो मुझे सहारे की जरूरत पड़ रही थी लेकिन जब मैं नीचे आकर बैठ गया तो मैं नहीं जानता कि परमपिता कृपाल ने किस तरह मेरे शरीर में करंट डाला और मैं आपकी सेवा कर रहा हूँ। इस ग्रुप में ज्यादा सतसंगी हैं और जवाब देने वाले पत्र भी ज्यादा हैं।

कल मैं आपको सतसंग में जो बातें बता रहा था उसका मतलब यह था कि अभी दिल्ली से परमपिता कृपाल के एक नामलेवा का पत्र आया था हाँलाकि वह व्यक्ति मुझे मानने वाला नहीं, वह कहीं और जाता है। उसने अपने पत्र में लिखा है कि जितना समय महाराज कृपाल दिल्ली में रहे दिल्ली में कोई गड़बड़ नहीं हुई। आप राजस्थान में रह रहे हैं वहाँ किसी ने ऐसा मुँह काला नहीं किया जैसा दिल्ली में हो रहा है। महाराज कृपाल के रहते हुए दिल्ली में ऐसा कुछ नहीं हुआ लेकिन उनके जाने के बाद ऐसा हुआ है। हम जिन्हें मानने वाले हैं हम उनके ऊपर अभाव लेकर बैठे हैं। ऐसी कई बातों का मेरे ऊपर असर था जो मैंने आप सबको बताई।

मैं महाराज सावन सिंह जी के मुत्तलिक बताया करता हूँ कि सिक्खों के मशहूर अकाली लीडर मास्टर तारा सिंह, उधमसिंह नागो और हमारी आर्मी का कमांडर भी बैठा था। इधर–उधर की बातें चल रही थी। किसी ने पूछा कि महाराज जी! सुना है जन्मपत्री में आपकी उम्र सौ साल है, क्या यह सच है? महाराज सावन ने कहा, ''हाँ! यह सच है अगर आप लोग मुझे टिककर काम करने देंगे। अगर मुझे दुख तकलीफ भरे पत्र लिखेंगे तो मैं पहले ही चला जाऊंगा। ज्यादातर प्रेमी

मुझे पत्र लिखते हैं उनमें वे अपनी समस्या और तकलीफें ही लिखते हैं।'' आप नब्बे साल की उम्र पूरी करके चले गए यानि आप दस साल पहले ही चले गए। जो अभ्यासी अंदर जाते हैं उन सबको यह पता है।

इसी तरह महाराज कृपाल के अभ्यासियों को पक्का विश्वास है कि महाराज कृपाल अपनी आयु से चौदह साल पहले ही चले गए। आपको पता है कि उनके ऊपर बोझ आता है इसमें कोई शक नहीं। उन्होंने जितना समय रहना था वे उतना समय नहीं रहे।

जिस प्रेमी का पत्र आया था कल मैंने उसका जबाव लिखकर आज उसको पत्र भेजा है। प्यारेया! सन्तों का एक धर्म नहीं एक देश नहीं सारा विश्व ही उनका अपना घर होता है। अगर दुनियावी पिता के बच्चे दुखी हों तो दुनियावी पिता को भी दुख होता है लेकिन सन्त तो हजारों माता–पिता का दिल लेकर संसार में आते हैं। अगर बच्चे इस तरह का लड़ाई झगड़ा करें एक–दूसरे के खून के प्यासे हों खून की होली खेल रहे हों तो उस बाप के दिल पर क्या गुजरती है?

एक सन्त के लिए दूर या नजदीक का कोई फर्क नहीं है। वह हमेशा ही हर जगह अपने हर सेवक की संभाल करते हैं उन्हें यह नहीं कि मैंने जिन्हें नाम दिया है उनकी ही मदद करनी है। दुनिया के किसी भी कोने में लोग उसे याद करें उस हस्ती को परमात्मा की तरफ से ही मदद करने की आज्ञा होती है क्योंकि वह उस पोल के ऊपर काम करता है। सन्त कोई करामात नहीं दिखाते, रिद्धि–सिद्धि से काम नहीं लेते लेकिन कुदरत उनका स्वरूप धारण करके जरूर उस समय अपने बच्चों की मदद करती है इसमें कोई शक नहीं।

मैं यह बात अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने वाली नहीं कर रहा आपके सवाल का जवाब दे रहा हूँ। एक बेसतसंगी का पत्र आया है वह मुझे सन् 1978 में मिला था। गर्मी का समय था हम कार से दिल्ली जा रहे

थे। रास्ते में पाठी और हमारा ड्राईवर बर्फ ले रहे थे, वहाँ उन्हें कुछ समय लग रहा था। वह आदमी कोई सौ फुट दूर दुकान पर बैठा था, वह उठकर मेरे पास आ गया वह मेरी शक्ल का दाढ़ी वाला मेरी उम्र का ही आदमी था। उसने आकर कहा, ''मुझे आपकी शखसियत ने खींच लिया है।'' मैंने अपने स्वभाव के मुताबिक हँसते हुए कहा, ''भ्रावा! मैं कोई चुम्बक नहीं जो मैंने तुझे खींच लिया।'' उसने कहा बेशक आपको यह कहना शोभा नहीं देता लेकिन यह सच है।

वह शख्स दिल्ली में किसी रिश्तेदार से मिलने गया था वह कारों के काफिले में फँस गया। वहाँ दाढ़ी वालों का ही कत्ल कर रहे थे। झगड़ा हिन्दु और सिक्खों का नहीं था, झगड़ा तो लुटेरों का था। लुटेरे वही रूप धारण करके एक कौम को निशाना बना लेते हैं। वहाँ हिन्दुओं ने सिक्खों की बहुत मदद की बहुत रक्षा की। कुदरत ने एक मोने आदमी का रूप धारण करके उस शख्स की मदद की कि तू कार की सीट के नीचे छिप जा मैं कार चलाता हूँ। उसने कार चलाकर उस शख्स को उसके ठिकाने पर पहुँचा दिया। अपने ठिकाने पर पहुँचकर उसने पूछा, ''बाऊजी! आपका पता क्या है?'' उसने कहा, ''मेरे पास पता बताने का समय नहीं, पता नहीं! मैंने कितनी जगह जाकर कितने लोगों की रक्षा करनी है।''

आखिर उस शख्स को वह वक्त याद आया, उसके पास मेरा पूरा पता नहीं था लेकिन फिर भी उसने अंदाजे से पत्र लिखकर भेजा राजस्थान में सब मेरा नाम जानते हैं बेशक सन्तबानी या 16 पी.एस. लिखा हो तो भी पत्र पहुँच जाता है चाहे लेट पहुँचे। उस शख्स ने पत्र में सतसंग में आने की इजाजत मांगी है। आप देखें! कुदरत किसी के जिम्मे वजन उठवाती है, कुदरत रक्षा करती है कुदरत अपने जिम्मे नहीं लेती किसी के जरिए हमेशा अपना काम करती है।

जिस दिन यहाँ से ग्रुप गया मैं उस दिन16 पी.एस से सिरसा तक गया हूँ। मैं हिन्दुओं के गाँवो से भी गुजरा हूँ मुझे कोई भय नहीं आया, मुझे पता था कि मेरे ही भाई खड़े हैं। मैंने ग्रुप की बस के आगे अपनी कार रखी थी। जब मैं सिरसा से16 पी.एस के लिए वापिस चलने लगा तो मैंने बड़े भरोसे के साथ पप्पू से कहा, ''मुझे पक्का भरोसा है कि आप लोग राजी खुशी दिल्ली पहुँचेंगे। परमात्मा कृपाल ने मुझ पर दया करके इन्हें राजी खुशी ही भेजा।''

मैंने तीस तारीख को रोटी खाई थी। वैसे भी मेरी खुराक बहुत थोड़ी है। बचपन से ही मुझे काजू, बिस्कुट या ज्यादा फल–फ्रूट खाने की आदत नहीं। मैं इन दिनों आधा छँटाक दूध पीता था वह भी नहीं पिया थोड़ी बहुत चाय पर ही अपनी गुजर की। कल ही मैंने पप्पू को बताया कि आज मैं आम खा रहा हूँ। उस ताकत ने अंदर सहारा भी दिया और इस शरीर में बैठकर इन जीवों की अंदर मदद भी की।

इन्द्रा गांधी अच्छी थी, हर कौम के साथ उसका प्यार था। उसने देश में एकता बनाए रखने में बहुत मदद की। उसके साथ विश्वासघात हुआ। किसी कौम के सारे बंदे बुरे नहीं होते। हिन्दुस्तान में सबसे ऊँचे ओहदे पर सिक्ख ही बैठे हुए हैं। हमारे देश का राष्ट्रपति भी सिक्ख है। पता नहीं दो सिरफिरों ने प्रधानमंत्री इन्द्रा गांधी के साथ विश्वासघात क्यों किया? कबीर साहब कहते हैं :

जो प्रभ किए भगत ते बाहंज तिन ते सदा डराने रहिए।

एक दफा मौहम्मद साहब अपने सेवकों के साथ बैठे थे। कुछ लोगों ने उनके एक सतसंगी की शिकायत की कि इसके अंदर यह ऐब है, यह ऐब करके आपके पास बैठा है। मौहम्मद साहब इंसाफ पसंद थे। हर सन्त इंसाफ पसंद होता है। मौहम्मद साहब ने कहा, ''मैं ऐसे लोगों की हामी नहीं भरूंगा जो किसी के पेट में छुरा मारेगा, जो किसी

के साथ विश्वासघात करेगा, जो किसी का माल लूटकर ले आएगा, जो अपनी औरत को छोड़कर व्याभिचार करता फिरेगा।''

जब मौहम्मद साहब अपने सतसंगियों को इस तरह की लानत डाल रहे थे तो ईमाम लोगों ने कहा कि आज हमें काफी सतसंगियों की जरूरत है। इसे तो आपने कलमा दिया हुआ है यह सतसंगी है, इसे इस तरह की सजा न दें। मौहम्मद साहब ने कहा, ''मैं चोर मुसलमानों का और झूठे शिष्यों का गुरु नहीं हूँ मैं सच्चे लोगों का गुरु हूँ।''

मुसलमान लोग सूअर को नहीं मारते, हिन्दु लोग गाय की रक्षा करते हैं। जब गुरु नानक जी के पास ऐसे सवाल आए तो आपने कहा:

हक पराया नानका उस सूर उस गाय।
गुरु पीर हामां तां भरे जे मुरदार न खाय।।

मैं उनकी हामी भरूंगा जो लोग पराया हक नहीं खाते। चाहे वह हिन्दु हैं चाहे सिक्ख हैं क्योंकि सन्तों के तो सभी सेवक होते हैं।

जिस तरह अब दिल्ली में जुल्म की होली खेली गई इस पर जल्दी काबू पा लिया गया लेकिन जिस समय गुरु गोबिंद सिंह का आगमन हुआ उस समय गुरु गोबिंद सिंह जी ने ऐसे जुल्म की बहुत विरोधता की, बेगुनाहो की रक्षा की। लुटेरे न हिन्दुओं के होते हैं न सिक्खों के होते हैं। वे जब देखते हैं कि सिक्खों का जोर है तो वे दाढ़ी लगा लेते हैं जब देखते हैं कि हिन्दुओं का जोर है तो दाढ़ी उतारकर एक तरफ रख देते हैं। आजकल ऐसे बनावटी काम बहुत मिल जाते हैं अगर मैं गलत कहता हूँ तो आप हमारे प्रिंसिपल साहब से पूछ सकते हैं यह कभी–कभी बनावटी मूँछे बनावटी नाक लगाकर खड़ा हो जाता है।

सन्तों का सब कौमों–मजहबों के साथ प्यार होता है। गुरु गोबिंद सिंह जी की शिक्षा पर अमल करें तो कोई दुश्मन नजर नहीं आता।

जंग के वक्त आपका एक सेवक भाई कन्हैया हुआ है जिसकी डयूटी पानी पिलाने की थी। कन्हैया अंदर जाता था वह गुरु गोबिंद सिंह जी की शिक्षा को समझ चुका था। बहुत से आदमी गुरु गोबिंद सिंह जी की शिक्षा को नहीं समझ सके थे। उन लोगों ने गुरु साहब से शिकायत की कि हम जिन जालिम दुश्मनों को मारते हैं कन्हैया उन्हें पानी पिलाकर फिर तगड़ा कर देता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने भाई कन्हैया को बुलाकर कहा, ''ये लोग तेरी शिकायत कर रहे हैं कि जिन दुश्मनों को ये मारते हैं तू उन्हें पानी पिलाता है।'' भाई कन्हैया ने कहा, ''गुरु जी! मुझे तो कोई दुश्मन नजर ही नहीं आता सबमें तू ही दिखाई देता है।'' गुरु गोबिंद सिह जी ने हँसकर कहा, ''इसने मेरी शिक्षा को समझ लिया है।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने भाई कन्हैया को मलहम दी कि जो कोई तड़पता हो जिसे ज्यादा जख्म हों उसे मलहम भी लगाया कर। आज भी भाई कन्हैया के नाम से सेवापंथी एक पंथ चल रहा है।

सन्त हमें एकता और प्यार सिखाने के लिए आते हैं। सन्त हमें बताते हैं कि हम सबका परमात्मा एक है, सबके साथ प्यार करें। आप अपने साथ जैसा सलूक चाहते हैं अपने पड़ोसी के साथ भी वैसा ही सुलूक करें; जिएं और जीने दें। इंसान को इस धरती पर जीने का जितना हक है उतना ही हक पशु–पक्षी को भी है। जो लोग सन्तों की शिक्षा से भटक जाते हैं वही लोग कत्लोगारत करने लगते हैं, खुद अशान्त होते हैं औरों को भी अशान्त कर देते हैं। अपनी जिंदगी दुखों में डालकर औरों की जिंदगी भी दुखों में कर देते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

अमृतवेला

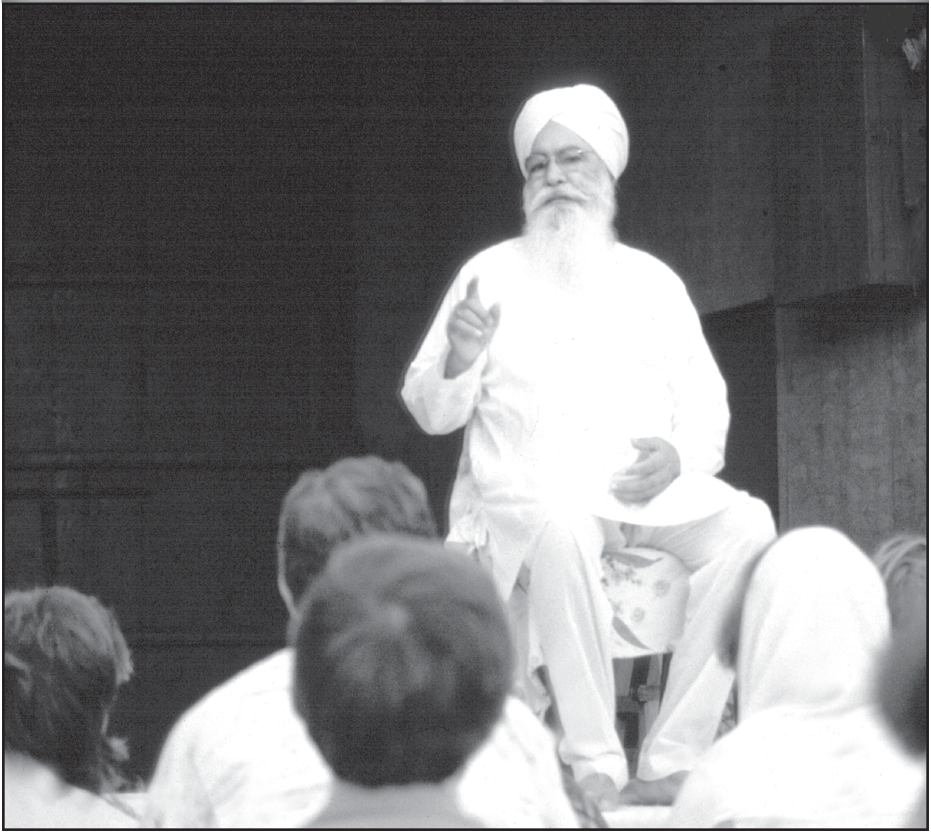

हाँ भाई! परमार्थ में कामयाब होने की कुंजी भजन-सिमरन है, हम ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन करके ही कामयाब हो सकते हैं। हम जानते हैं कि सुख को प्राप्त करने का मूल्य दुःख है।

मेहनती आदमी सदा कामयाब होता है चाहे घर का कारोबार करें चाहे परमार्थ का कारोबार करें। मोती प्राप्त करने के लिए हमें गहरे समुद्र में डुबकी लगानी पड़ती है। सोना खान खोदकर

ही निकाला जाता है। सोना जब सुनार की चोटे सहन कर लेता है तभी किसी के हाथ, कान और माथे में शोभा देता है।

सन्तमत में कामयाब होने के लिए मजबूत हृदय की जरूरत होती है। हर एक को कुछ शर्तों का पालन करना पड़ता है लोकलाज छोड़नी पड़ती है, मान-बड़ाई को त्यागना पड़ता है और अपने ओहदे का ख्याल भी छोड़ना पड़ता है।

बाबा बिशनदास बताया करते थे कि गांव की लड़कियां शहर चली गई। वहाँ लोग दुपट्टे, पगड़ियां रंगवा रहे थे। उन लड़कियों का भी ख्याल हुआ कि हम भी दुपट्टे रंगवा लें! उन लड़कियों ने ललारी से कहा, ''वीरा! हमारे भी दुपट्टे रंग दे।'' ललारी ने कहा, ''लाओ बहन जी! मैं अभी रंग देता हूँ। आपके दुपट्टे बिल्कुल सुंदर बना देता हूँ।'' उन लड़कियों ने कहा, ''हम बाजार में सिर से नंगी कैसे हो जाएं?'' ललारी ने कहा, ''मैं तुम्हारे सिर के ऊपर ओढ़े हुए दुपट्टे कैसे रंग सकता हूँ?'' आप सोचकर देखें! ललारी के पास रंग है और वह दुपट्टे रंगने में समर्थ है अगर लड़कियां अपना दुपट्टा उतारकर नहीं देती तो ललारी किस तरह रंग चढ़ा दे?

इसी तरह सतगुरु के पास नाम का रंग है। सतगुरु रंगने के लिए भी तैयार है और माहिर है लेकिन हम यह सोचते हैं कि हमारी लोकलाज बनी रहे। हम अपना मन सतगुरु के हवाले नहीं करते तो वह किस तरह हमें नाम में रंग सकते हैं?

हाँ भई! मन को शान्त करें। शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम-प्यार से करें। अभ्यास के समय मन को बाहर न भटकने दें। बाहर की किसी आवाज की तरफ ध्यान न दें; तीसरे तिल पर एकाग्र हों। हाँ भई बैठो।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

04	से	06	अगस्त	2017
07	से	11	सितम्बर	2017
29, 30 सितम्बर व 01 अक्टूबर				2017
03	से	05	नवम्बर	2017
01	से	03	दिसम्बर	2017